eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 05, May 2026

भक्तिकालीन कृष्ण काव्य धारा के महाकवि सूरदास एवं उनका काव्य

दीप्ती कटियार[1], डा0 शिप्रा वर्मा[2]

[1]शोध छात्रा– डा0 भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, अनौगी, कन्नौज

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर– डा0 भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, अनौगी, कन्नौज।

Received: 22 May 2026 Accepted & Reviewed: 25 May 2026, Published: 31 May 2026

Abstract

हिंदी साहित्य जगत में भक्तिकाल को **'स्वर्ण काल'** कहा जाता है। इस काल को स्वर्णिम युग बनाने में जिन कवियो का योगदान रहा है। उनमें महाकवि सूरदास अग्रणी है। सूरदास कृष्ण भक्ति काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि है। सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी उनकी प्रमुख रचनायें हैं, जिनमें से सूरसागर को महाकाव्य की श्रेणी में गिना जाता है। सूरदास ने अपने काव्य में श्रीकृष्ण की लीलाओ का सुन्दर और सजीव चित्रण किया है। भक्तिकाल के दूसरे कवियो का सुंदर और सजीव चित्रण किया है। भक्तिकाल के दूसरे कवियो ने कल्पना लोको की सृष्टि की है, जबकि सूरदास ने जीवन के यथार्थ और अनुभूति को अपने काव्य में सृजन किया है। ब्रज के ग्राम जीवन की युक्त और विस्तृत भूमि पर कृष्ण के चरित्र द्वारा सूरदास काव्य का वितान विकसित हुआ है। सूरदास काव्य महज भागवत भजन नहीं अपितु उसमें भावनाओं का अपार सागर है। यह प्रेम के आकष्ठ में डूबे जीवन जीने की कला है।

मुख्य शब्दः– कृष्ण काव्य धारा, भक्ति भावना, कल्पना शक्ति, जीवनानुभूति, प्रेम सौन्दर्य, भगवत भजन।

Introduction

महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्य के उन महाकवियो में गिने जाते है, जिन पर हिंदी साहित्य का महान गौरव टिका हुआ है। सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण भक्ति काव्य धारा के अप्रितम भक्त कवि माने जाते है। उन्होने अपनी रचनाओ में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का अत्यंत सुंदर और मनोहर वर्जन किया है। सूरदास की भक्ति भावना का केंद्र वात्सल्य एंव श्रंगार है। इन दोनों भावों की अभिव्यक्ति में उनकी पैठ इतनी गहरी कि आलोचको के मतानुसार अन्य कवियो की उक्तियाँ उनके सामने फीकी जान पडती है। उनकी काव्य प्रतिभा विलक्षण तथा कल्पनाशक्ति अद्भुत है। उनका सौदर्न्य बोध भी अद्वितीय है। प्रेमाशक्त ह्रदय की सहज अनुभूतियो का स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने में वे सिद्ध हस्त थे। कृष्ण लीला का वर्जन करते समय उन्होने अपने परिवेश और समाज के यथार्थ को भी गहराई से आत्मसात किया है। ब्रज की लोक संस्कृति ने उनके काव्य को जीवंतता, स्वाभाविकता और सास्कृतिक समृद्धि प्रदान की।

सूरदास का जीवन परिचयः– कृष्णभक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि सूरदास जी ने अन्य प्राचीन और मध्यकालीन कवियो की तरह अपने बारे में न के बराबर लिखा है। यही कारण है कि उनकी जन्मतिथि व समय के बारे में विद्वानो में मतभेद है, किन्तु हिंदी साहित्य के कई विद्वानों द्वारा उनका जन्म लगभग 1478 ई0 माना जाता है। वही एकमनातुसार जैसे रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उनका जन्म स्थान मथुरा के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 05, May 2026

निकट रुनकता क्षेत्र में माना है जबकि दूसरे मतानुसार जैसे श्री द्वारिकाप्रसाद, प्रभुदयाल मित्तल एंव हरवंशलाल शर्मा ने उनका जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक स्थान पर माना है।

हरिनाम जी की 'भावप्रकाश' नामक टीका के अनुसार सूरदास सारस्वत ब्राहमण थे। वे चार भाइयो में सबसे छोटे थे। शगुन विचारने में उनकी विलक्षण बुद्धि थी। छः वर्ष की आयु में जब उन्होने अपने पिता की खोई मोहरो का पता बताकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होने लोगों का भूत भविष्य बताकर काफी धन आर्जित कर लिया, तब उन्हे लगा कि ज्योतिष विद्या उनकी भक्ति और कविता का गला घोट रही है तब वह सब कुछ छोडकर आगरा और मथुरा के बीच गऊ घाट पर रहने लगे।

यह तो निविर्वाद है कि सूरदास नेत्र विहीन थे। किंतु वे जन्मांध थे या बाद में हुए यह विवादास्पद है। कहा जाता है कि एक बार सूरदास जब सूखे कुएँ में गिर गये तो उन्हे स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने निकाला, उनको जाते हुए देखकर सूरदास ने कहा।

''बाँह छुडाए जातहो निबल जानकर मोहि

हृदय ते जब जाओगे तो सबल कहोगे तोहि।''

तब उन्होने भगवान से कहा अब वे साक्षात परमब्रहम के दर्शन होने के बाद अब सागर को देखना नही चाहते और फिर से नेत्रविहीन होने का वरदान ले लिया।

पुष्टिमार्ग में दीक्षितः– माना जाता है कि महाकवि सूरदास गऊघाट पर निवास करते थे। वही श्रीनाथ जी के मंदिर में भक्तिभाव से विनय पद गाते थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य ने उन्हे पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया और कृष्णलीला गाने की प्रेरणा दी। सूरदास ने गुरुकृपा से कृष्णलीला पर ब्रजभाषा में रचनाये की है क्योकि यह उनकी मातृभाषा होने के साथ–साथ उनके आराध्य की लोकभाषा की थी। भागवत के दशम स्कन्ध को लेकर सूर ने कृष्ण के चरित्र के जो मनोरम चित्र अपने पदो में अंकित किये वे भक्तो और रसिको दोनो के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। बल्लभाचार्य की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र विटकभल्लाचार्य ने 'अष्टछाप' की स्थापना की। अष्टछाप कवियो में सूर का स्थान सर्वोपरि है। सन् 1583ई के लगभग पारसौली गाँव में इनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक कृतियाँः– नागरी प्रचारिणी सभा की खोज के अनुसार सूरदास की रचनाओं की संख्या 25 है। किंतु अभी तक प्रमाणिक रुप से सूर के केवल तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध है।

1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्य लहरी

सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी का काव्य रुप– सूरदास जी की प्रमुख कृति 'सूरसागर' है इसकी रचना श्रीमद्भागवत के आधार पर की गई है। इसमें 12 अध्याय है। इस ग्रन्थ में विनय, भक्ति, विष्णु के अवतारो तथा अन्य पौराणिक कथाओ का निरुपण किया गया है सूरसागर के पदो की संख्या सवा लाख बतायी जाती है, जिसमे से अब तक केवल पाँच हजार पद ही प्राप्त हो पाये है, कृष्ण का जन्म, लालन, पोषण, बाल मनोविज्ञान, यशोदा के साथ उनकी लीलाओ का वर्णन, गोपियो का कृष्ण के प्रति अन्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 05, May 2026

प्रेम 'सूरसागर'' का सबसे मार्मिक अंश है।'' सूरसागर के दशय अध्याय में दशय स्कंध का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इसके पूर्वद्धि मे कृष्णलीलाओ का वर्णन है जबकि उत्तरार्द्ध में गोकुल से गमन का वर्णन है।

सूरसागर की सराहना करते हुए डा0 हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है।

''काव्यगुणो की इस विशाल वनस्थली में एक अपना सहज सौन्दर्य है वह उस स्मणीय के समान नही जिसका सौन्दर्य पद पद पर माली के कृतित्व की याद दिलाता है, बल्कि उस कृत्रिम वनभूमि की भांति है जिसका रचयिता रचना में धुल मिल गया है''

सूरसारावली में 1106 छंद है। इसका लक्ष्य पदबन्ध वाली हरिलीला का सार है। सूरसारावली की रचना की रचना स्कन्धात्मक क्रम से है। यह रचना सूरसागर का सार होते हुए भी स्वतंत्र रचना की तरह है।

साहित्य लहरी दृष्टकूट के मुक्तक पदो के लिए प्रसिद्ध है। इन पदो में चमत्कारिका और दुरुहता है। रहस्यात्मक भावो के लिए दृष्टिकूट शैली को अपनाया है। दृष्टकूट यह शैली सिद्धो, नाथो और कबीर की कविता से होते हुए आगे विकसित हुई। सूर ने इस परम्परा से जुडते हुए भी इसमें मौलिकता के साथ इसको विरह और संयोग के पदो में अपनाया है।

कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा और सूरदास का काव्य– भक्ति काव्य का आरम्भ निर्गुण संत काव्य से होता है। जिसका प्रसार सगुण भक्ति में हुआ। राधा कृष्ण विषयक प्रथम काव्य रचना जयदेव की 'गीतगोविन्द' है जिसमें भक्ति और श्रंगार का अदभुत समावेश है इसी पद्धति में विद्यापति ने राधाकृष्ण से जुडे पदो की रचना मैथिली में की। विद्यापति के बाद सूरदास है। अपनी पूर्व परम्परा को आत्मसात कर सूर ने अपनी कविता में सृजन का ऐसा संसार रचा जिसमें परवर्ती कृष्ण की परम्परा प्रशस्त हुई। उन्होने भक्ति काव्य में प्रेम वात्सल्य और माधुर्य की ऐसी कविता रची जिसकी व्यक्ति आज भी है। ''सूरसागर'' में कृष्ण के गोकुल मथुरा वृन्दावन की सम्पूर्ण आख्यायिका को गीति प्रबंध के रुप में देखा जा सकता है। कृष्ण के जन्म शैशव, ग्वालो के साथ विनोद, गोचारण, बाललीला, गोपियो के साथस क्रीडा, छघवेश्ज्ञ धारणकर असुरो का वध आदि प्रसंगो की मुक्तक रचनाओ का चित्रण यहाँ मनोहारी है। यहाँ कुछ प्रसंगो का चित्रण दृष्टव्य है।

बाललीला–

सूरदास जी ने कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन इस प्रकार किया है।

''मैया मै नहि माखन खायो।

ख्याल परे पे सखा मिलि, मेरे मुख लपटायौ।।

बालहठः–

'' मैया मै तो चंद खिलौना लैहो।

जैहो लोट धरन मे अबही तेरी गोद न ऐहो।।''

गोचाराग–

कृष्ण जब सब ग्वालो को गाय चराते देखते है तो वे भी जशोदा माँ से गाय चराने के लिए कहते है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 05, May 2026

'' मैया हो गाई चरावन जैहो।

तू कहि महर नन्द बाबा सो, बडो भयो न डरैहो।।

रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगंहि रैहो।

वंशीवट तर ग्वालनि के संग खेलत अति सुख पैहो।।

कृष्ण और राधा की प्रथम मिलय का बडा ही सुन्दर मनमोहक वर्जन सूर ने इस प्रकार किया है।

'' बूझत श्याम कौन तू गोरी।

कहाँ रहति काकी है बेटी देखी नही कबहूँ ब्रज खोरी।।''

उद्धव गोपी संवाद–

गोपियाँ उद्धव से अपनी कब्ज प्रेम भक्ति का परिचय इस प्रकार देती है–

'' ऊधो मन भये इस बीस।

एक हुतो सो गयो स्याम संग, को आराधै ईस।।

इन्द्रिय शिथिल भई केशव बिनु, ज्यो देही बिनु सीस।

सूरदास अतिहि कत कहिये तुम हम हौ अब लीस।।

गोपियो का विरह वर्णन–

'' बिनु गोपाल बैरन भई कुंजै।

तब वे लता लागति अति सीतल अब भई विषम ज्वाल की पुंजौ।

इव्यादि इन्ही प्रसंगो के चित्रण ने सूरदास के काव्य को अमरता प्रदान की। ऐसा वर्णन करने में कृष्ण काव्य परम्परा का कोई भी कवि इतना अधिक समर्थ नही हुआ जितना कि सूर भक्तिकाल में सूर की कविता के महत्व की ओर संकेत करते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा।

''जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष धारा जो काल की कठोरता में दब गई थी। अवकाश पाते ही लोक भाषा की सरसता में परिणत होकर मिथिला की अमराइयो मे विद्यापति, कोकिल कष्ठ में प्रकट हुई और आगे चलकर ब्रज के करील कुंजो के बीच मुरझााने मनो को सीचने लगी। आचार्यो की छाप लगी हुई आठ वाणियो श्रीकृष्ण की प्रेमलीला का कीर्तन करने उठी, जिनमें सबसे सुरीली और मधुर झनकार अन्धे कवि सूरदास की बीजा की थी।

कृष्ण काव्य परम्परा में सूर का स्थानः– हिन्दी के कृष्ण काव्य पर संस्कृत कवि जयदेव के काव्य, संगीत और गीत का सीधा असर है। विद्यापति के राधाकृष्ण विषयक पदो में वर्णित आख्यान अत्यंत दुर्लभ है। उद्धव की उपस्थिति दोनो काव्य में है। राधा कृष्ण से जुडे संयोग एंव वियोग दोनो पक्षो की अनेकानेक छवियाँ हमें विद्यापति के यहाँ दिखती है। सूर के पद विद्यापति की परम्परा को आगे बढाते हुए प्रतीत होते है। सूर के काव्य में विद्यापति के गीतो का माधुर्म की विरासत का समावेश तो है ही ब्रज, की लोक परम्परा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 05, May 2026

से सिक्त होकर उनकी कविता अधिक उर्वर बनती है। कृष्ण काव्य परम्परा में सूर ने कृष्ण को लीलारुप और प्रेम का जैसा चित्रण किया है। वह कृष्ण काव्य में सूर ने कृष्ण को लीलारुप और प्रेम का जैसा चित्रण किया ाहै वह कृष्ण काव्य परम्परा का सबसे सृजनशील स्वर है। सूर के बारे में शुक्ल का कथन सही है कि उन्होने बन्द आंखो से वात्सल्य और श्रंगार का जो चित्रण किया वह कृष्ण काव्य परम्परा का कोई और कवि न कर सका कृष्ण काव्य परम्परा में सूरदास सर्वश्रेष्ठ कवि है।

निष्कर्षः– उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि सूरदास अपने काव्य में अनुभूति की व्यापकता और गहराई की गुणवत्ता प्रदान करते है। उन्होने अपनी विलक्षण प्रतिभा से काव्यका सृजन किया है। उनके काव्य में गीतात्मक की गहन संवेदना है और लोक एंव शास्त्र को सहज संवेदना है। कृष्ण काव्य परम्परा में सूर के काव्य का सृजनात्मक पक्ष विशेष प्रशंसनीय है। सूरदास भक्तिकालीन कृष्ण काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि है।

सन्दर्भ सूची–

1. वर्मा, धीरेन्द्र हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 , ज्ञानमण्डल, वाराणसी।
2. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, सूर साहित्य, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पाण्डेय, मैनजर, भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा बनारस।
7. वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश भाग–2, ज्ञानमण्डल, वाराणसी।
8. www.wikipedia.com
9. www.google.com